India Map

भारत में आंतरिक प्रवास
Internal migration in India.

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जनसंख्या के गमन को प्रवास कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है — अस्थायी एवं स्थायी। अस्थायी प्रवास वार्षिक, मौसमी या प्रतिदिन भी हो सकते हैं। जनसंख्या का प्रवास चार प्रकार का होता है — (i) ग्रामीण – ग्रामीण, (ii) ग्रामीण-नगरीय, (iii) नगरीय-नगरीय, (iv) नगरीय-ग्रामीण। प्रवास के प्रमुख कारण हैं — आर्थिक कारक-बेहतर रोजगार के अवसर, बेहतर जीवन की दशाएँ। सामाजिक कारक-जैसे, विवाह, सामाजिक सुरक्षा, राजनीतिक असुरक्षा, तथा प्रजातीय संघर्ष, आदि भी लोगों के प्रवास को प्रभावित करते हैं। अन्य सामाजिक कारक, जैसे - शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य, वैधानिक सेवाएँ आदि भी अकाल्पनिक प्रवास को प्रेरित करते हैं।

प्रवास वास्तव में प्रादेशिक अर्थव्यवस्था के कतिपय कारकों का प्रतिफल है। जब कोई नगर कुछ कारणों से बाहर के लोगों को आकर्षित करता है तो इसे 'आकर्षक कारक' (Pull factor) कहते हैं। इसके विपरीत बेरोजगारी, मुखमरी, इत्यादि कारक जो जनसंख्या को अन्यत्र स्थान पर जाने को विवश करते हैं, प्रत्याकर्षक कारक (Push factor) कहलाते हैं।

भारत में आंतरिक प्रवास की प्रवृत्तियाँ
(Trends of internal migration in India)

भारत की कुल जनसंख्या 102.7 करोड़ (2001) है जिसमें से 68% जनसंख्या अपने पैतृक स्थान पर ही वास करती है। अर्थात् यहाँ की दो-तिहाई आबादी अपने मूलस्थान पर ही रहती है। भारतीय लोगों में जन्मभूमि से लगाव होता है। यहाँ की कृषि प्रधान व्यवस्था, जाति प्रथा, संयुक्त परिवार, अशिक्षा, निर्धनता इत्यादि कारकों ने आंतरिक प्रवास को नियंत्रित किया है।

इधर हाल के वर्षों में भारत में आंतरिक

Scanned with CamScanner

प्रवास में वृद्धि हुई है। क्या यातायात के साधनों एवं परिवहन की बारम्बारता में वृद्धि, संचार सेवा में वृद्धि, शिक्षा के विकास, औद्योगिक विकास होने के कारण आंतरिक प्रवास में वृद्धि देखी जा रही है।

शिक्षा, ~~चिकित्सा~~ चिकित्सा व ~~स्वास्थ्य~~ स्वास्थ्य

शिक्षा, चिकित्सा व स्वास्थ्य की सुविधा प्राप्त करने के लिए भी आंतरिक प्रवास में बढोत्तरी हो रही है। तीव्र बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न कृषिभूमि पर जनदाब बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर उद्योगों के विकास के ~~लिए~~ कारण रोजगार में वृद्धि हुई है। फलतः कृषि क्षेत्र से नगरीय क्षेत्र में प्रवास को बढ़ावा मिला है। पहले जहाँ नौकरी प्राप्ति के लिए केवल पुरुष प्रवास करते थे वहीं अब इस क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिशत भी बढ़ा है। महिलायें भी आधुनिक व तकनीकि शिक्षा प्राप्त कर महानगरों में अच्छे जीवन जीने के लिए प्रवास करने लगी हैं।

1981 में भारत की नगरीय जनसंख्या जहाँ 23.31% थी वह बढ़कर 2001 में 27.81% तथा 2011 में 31.6% हो गई। नगरीय जनसंख्या में यह वृद्धि मुख्यतः आंतरिक प्रवास का ही परिणाम है।

प्रवासी जनसंख्या को दो वर्गों में रखा जा सकता है— (i) एक राज्य से दूसरे राज्य में प्रवास करने वाली (Inter state) तथा (ii) राज्य के अन्दर ही एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रवास करने वाली (Intra state)। तदनुसार प्रवास की अग्रोक्त प्रवृतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं—

Scanned with CamScanner

तालिका - A - राज्य के अन्दर प्रवास की प्रवृत्तियाँ (प्रतिशत में)

प्रवास के प्रकार	कुल प्रवासी जनसंख्या	पुरुष प्रवासी	स्त्री प्रवासी
ग्रामीण - ग्रामीण	69.33	49.67	75.77
ग्रामीण - नगरीय	15.74	27.27	11.95
नगरीय - ग्रामीण	5.84	7.68	5.23
नगरीय - नगरीय	9.10	15.38	7.04
योग	100.00	24.69	75.31

तालिका B - अन्तः राज्यीय प्रवास के प्रतिरूप (प्रतिशत में)

प्रवास के प्रकार	कुल प्रवासी जनसंख्या	पुरुष प्रवासी	स्त्री प्रवासी
ग्रामीण - ग्रामीण	28.40	18.02	36.71
ग्रामीण - नगरीय	32.83	41.42	25.95
नगरीय - ग्रामीण	7.17	6.67	7.58
नगरीय - नगरीय	31.60	33.90	29.75
योग	100.00	44.48	55.52

राज्य के अन्दर प्रवास — उपरोक्त तालिका(A) से स्पष्ट है कि ग्रामीण - ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवासी जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक (69.33%) है। इस वर्ग के प्रवास के स्त्रियों का प्रतिशत (लगभग 76%) पुरुषों से अधिक है। इन प्रवासों का मूल कारण विवाह है।

अन्तः राज्यीय प्रवास — तालिका (B) के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ग्रामीण - नगरीय तथा नगरीय - नगरीय प्रवासों का प्रतिशत अधिक सर्वाधिक है। इन वर्गों में पुरुषों का प्रतिशत स्त्रियों की अपेक्षा अधिक है। ऐसे प्रवासों का मूल कारण रोजगार है। नगरीय - ग्रामीण तथा ग्रामीण - ग्रामीण पुरुष प्रवासी जनसंख्या प्रतिशत स्त्रियों की अपेक्षा कम है। क्योंकि गाँवों में रोजगार के अवसर बहुत कम होते हैं।

प्रवास की प्रवृत्तियों के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते

(i) राज्यों के भीतर प्रवास करनेवाले व्यक्तियों में से लगभग 85% लोग ग्रामीण हैं, जबकि अन्तः राज्यीय प्रवासियों में से लगभग

Scanned with CamScanner

63% व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों के मूल निवासी हैं।
(2) राज्यों के भीतर प्रवास करनेवाली जनसंख्या में से लगभग तीन चौथाई स्त्रियाँ हैं। उनके प्रवास का कारण विवाह है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ऐसे अधिकांश प्रवास आर्थिक कारकों की अपेक्षा सामाजिक कारकों से प्रेरित होते हैं।
(3) राज्यों के भीतर प्रवास करने वाली प्रमुख जनसंख्या में से लगभग आधे व्यक्ति ग्रामीण से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। ऐसे प्रवासों का कारण ग्रामीण क्षेत्रों में ही रोजगार की प्राप्ति है।
(4) राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश तथा केरल से अधिकांश (Out migration) (उत्प्रवास) होते हैं।
(5) पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र, असम, दिल्ली, चण्डीगढ़ तथा अण्डमान एवं निकोबार द्वीपों में आप्रवास (in-migration) होते हैं।
(6) पुरुषों के सन्दर्भ में आर्थिक विकास की विषमताएँ तथा स्त्रियों के सन्दर्भ में विवाह प्रवास के प्रमुख कारक या कारण हैं।
(7) घने बसे ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि पर जनसंख्या का अधिक भार होने से प्रवास की प्रवृत्ति बढ़ती है जबकि बड़े नगर, खनन तथा औद्योगिक केन्द्र, बागाती खेती तथा हरित क्रान्ति अप्रवास को प्रेषित करने के प्रमुख कारक हैं।
(8) असम एवं निकटवर्ती राज्यों के चाय बागानों में बिहार प० बंगाल उड़ीसा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश से मजदूर आकर काम करते हैं।
(9) उत्तर बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के मजदूर फसल के रोपने एवं कटन के समय पंजाब एवं हरियाणा में बड़ी संख्या में प्रवास करते हैं।
(8) आंतरिक प्रवास का क्षेत्र महाराष्ट्र, ~~के~~ प० बंगाल, गुजरात के औद्योगिक एवं व्यापारिक क्षेत्र हैं, जहाँ उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार से आकर लोग काम करते हैं।

Scanned with CamScanner

Internal migration → in India

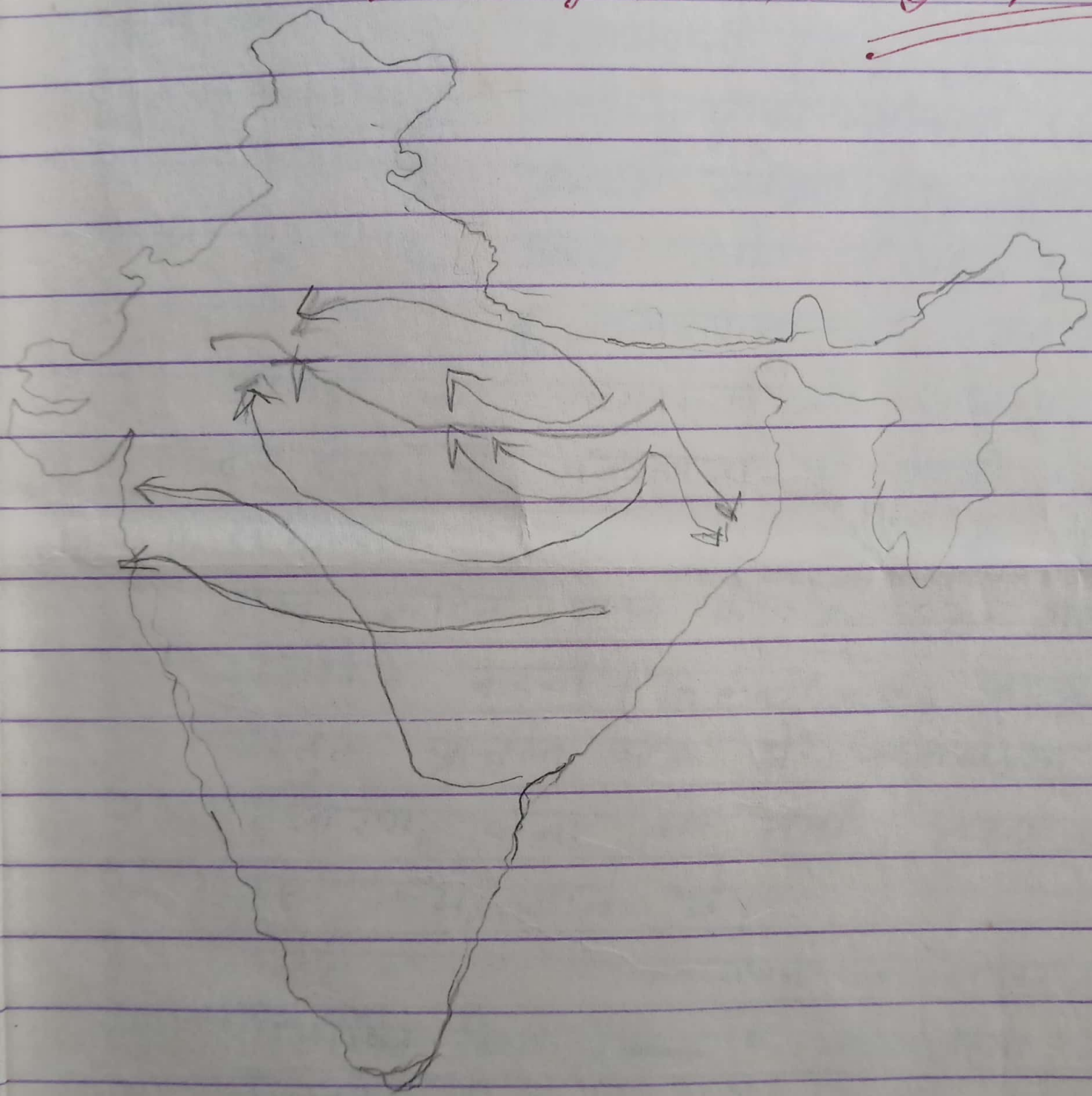

Scanned with CamScanner